18

दान देने से आपको या मिलेगा

(फिलिप्पियों 4:14–20)

अपने पिछले पाठ में हमने फिलिप्पियों के नाम पौलुस के पत्र के मुख्य भाग के अन्त में ''धन्यवाद'' की टिप्पणी की समीक्षा से आरम्भ किया था। कइयों को आश्चर्य होता है कि प्रेरित ने पत्र के आरम्भ में तो दान की बात नहीं की और अन्त तक धन्यवाद की अपनी अभिव्यक्ति को भी पूरा नहीं किया। याद रखें कि यह कम से कम संगठन वाला एक निजी पत्र है। पौलुस ने तुरन्त पत्र के प्राप्तकर्त्ताओं को अपनी मंशा बतानी चाही। पर उसने पत्री के चरम वाले अन्त तक धन्यवाद के वास्तविक शब्दों को छोड़ दिया।

एक सिखाने वाले ने ''थैंक यू'' कहने का ढंग अपनी कक्षा को बताया। उसने कहा, '' 'थैंक्स सैंडविच' का इस्तेमाल करें। कहें 'थैंक्स।' यह सैंडविच पर ब्रैड की नीचे वाली स्लाइस है। फिर उन विवरणों को जोड़ें जो उपयोगी हैं। यह सैंडविच की फिलिंग है। अन्त में फिर से कहें 'थैंक यू' यह सैंडविच पर ब्रैड की ऊपरी स्लाइस है।'' मुझे यकीन है कि पौलुस ने कभी ''थैंक्स सैंडविच'' नहीं सुना था, पर फिलिप्पियों को उसने यही दिया।

थैंक्स कहने की पौलुस की शायद सबसे चौंकाने वाली बात यह है कि उसने कभी ''थैंक्स'' के लिए (*eucharistia*) का इस्तेमाल नहीं किया। वास्तव में फिलिप्पियों 4:10–20 में आभार जताने की प्रेरित की बात अब तक की लिखी जाने वाली सब से असामान्य ''थैंक यू'' में से एक है। यह समझने के लिए कि पौलुस ने इस विषय को ऐसे क्यों लिया, आर्थिक सहायता के प्रति उसके व्यवहार के बारे में कुछ जानने में सहायता मिल सकती है।

यीशु ने ज़ोर दिया था कि वचन के सिखाने वालों और प्रचारकों को उन से सहायता लेने का अधिकार है, जिन्हें वे सिखाते हैं (लूका 10:7)। पौलुस ने भी यही बात कही (1 कुरिन्थियों 9:9–11, 13, 14; गलातियों 6:6)। जब किसी इवैंजलिस्ट के पास ''सैकुलर'' नौकरी में काम न हो तो वह अपना समय अध्ययन करने, सिखाने और लोगों की आवश्यकताओं की सेवकाई में अधिक दे सकता है।

परन्तु क्या पौलुस उस मण्डली से जिसमें वह वर्तमान में काम कर रहा था, सहायता स्वीकार करने में झिझक रहा था (देखें 1 कुरिन्थियों 9:18; 2 कुरिन्थियों 11:7, 9; 1 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:8)। वह नहीं चाहता था कि कोई यह सोचे की प्रचार करने का उसका उद्देश्य धन कमाना था (देखें 2 कुरिन्थियों 12:14)। प्रेरित अपनी सहायता आमतौर पर तम्बू बनाने के काम करके करता था (प्रेरितों 18:1–3; देखें 1 कुरिन्थियों 4:12क; 1 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:8)। साथ ही पौलुस उन जगहों से सहायता लेने को तैयार था, जहां उसने *पहले* प्रचार किया था (देखें 2 कुरिन्थियों 11:8, 9)।

ऐसी सहायता मिलने से उसे सुसमाचार को फैलाने का और समय मिल जाता (देखें प्रेरितों

18:5)। इसके बावजूद वह इस सम्भावना से संवेदनशील रहा कि कोई उस पर ''धन के लिए प्रचार कर रहा'' होने का आरोप लगा सकता है।

पौलुस के मन में आए इस तनाव से हमें यह समझाने में सहायता मिल सकती है कि उसने प्रेरितों को वैसे धन्यवाद क्यों किया। वह उन्हें बताना चाहता था कि वह उनके दान के लिए आभारी है पर यह प्रभाव नहीं छोड़ना चाहता था कि वह *दान* पाने के लिए प्रचार करता है। पिछले पाठ के वचन में, उसने पहले कहा कि वह उनकी सहायता से आनन्दित है (4:10)। पर फिर जोड़ दिया कि वह ऐसी सहायता पर निर्भर नहीं है (आयतें 11-13)। पर नाशुक्रगुज़ार लगने से बचने के लिए उसने जल्दी से जोड़ दिया कि उन्होंने उसकी सहायता करके अच्छा किया है (आयत 14)। 10 से 20 आयतों की समीक्षा वाले अपने अध्ययन में आगे बढ़ते हुए हम देखेंगे कि पौलुस दान के लिए आभार व्यक्त करने के बीच कभी आगे या पीछे जाता है (आयतें 14-16, 19) और इस बात का इनकार करता है कि उसे सहायता की आवश्यकता थी (आयत 17क)।

इस पाठ का शीर्षक है, ''दान देने से *आपको* क्या मिलेगा।'' दान देने का हमारा विचार आम तौर पर वहीं तक सीमित होता है कि इससे प्राप्तकर्त्ता को क्या मिलेगा, जिसमें थोड़ा-सा विचार यह होता है कि यह देने वाले के लिए क्या कर सकता है। बाइबल के अनुसार, प्राप्तकर्त्ता से अधिक लाभ दानी को देना है (देखें मलाकी 3:10; लूका 6:38; प्रेरितों 20:35; 2 कुरिन्थियों 9:6-11)।

सहभागिता करने की आशीष (4:14, 15)

आयत 14 से आरम्भ करते हैं, जहां पौलुस ने कहा, ''तौभी तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए।'' इस आयत में यूनानी भाषा के शब्द (*thlipsis* का एक रूप) 1:17 में अनुवादित शब्द ''क्लेश'' है। जैसा पिछले पाठ में बताया गया था, यह एक मज़बूत शब्द है। इसका ''दुख'' से सम्बन्ध परिस्थितियों के दबाव या लोगों के विरोध के कारण'' ''कुछ भी जो मन पर बोझ डालता है।''[1] NIV में ''अच्छा हुआ कि तुम मेरी परेशानियों में सहभागी हुए।'' पौलुस की कुछ ''परेशानियां'' निश्चित रूप से आर्थिक थीं (देखें आयत 18)।

प्रेरित की वित्तीय कठिनाइयों के सम्बन्ध में, निम्न बातों पर विचार करें। कई बार पौलुस को अन्तिम स्थानों से सहायता मिलती थी, जहां उसने पहले प्रचार किया हो, पर कई बार नहीं मिलती थी। कालान्तर में उसके लिए यह कोई बड़ी बात नहीं है। क्योंकि वह तम्बू बनाकर अपना निर्वाह कर लेता था। परन्तु चार या अधिक वर्षों से (देखें प्रेरितों 24:27; 28:30), वह जेल में था और काम नहीं कर पाता था। इस बात ने उसे बुरी तरह से निर्भर बना दिया, जो दूसरों को रहमोकरम पर था। क्या कई बार उसे बेचैन करने वाले हालात मिलते थे? शायद।

धन्यवाद की पौलुस की अभिव्यक्तियों को पढ़कर मुझे यह प्रभाव मिला कि फिलिप्पियों के दान पहुंचने के समय उसके आर्थिक संसाधन लगभग खत्म हो चुके थे। फिर उसने उन्हें आश्वस्त किया, ''... तुम ने भला किया कि मेरे क्लेश में मेरे सहभागी हुए।'' ''भला'' (यू.: kalos) शब्द ''उसका संकेत देता है जो भीतरी रूप में अच्छा, और इस प्रकार, सुन्दर, अच्छा, खूबसूरत है।''[2] एक अर्थ में पौलुस ने कहा, ''तुम ने वह किया है, जो बड़े खूबसूरत ढंग से

सही है।''

परन्तु आयत 14 में मैं जिस शब्द पर ज़ोर देना चाहता हूं, वह है ''सहभागिता'': उन्होंने *सहभागिता* करके भला किया। पत्र के पहले भाग में पौलुस ने इस तथ्य की बात की कि फिलिप्पियों ने कालान्तर में और वर्तमान में उसके साथ सहभागिता की थी (1:5, 7)। 4:15 में भी ''सहभागिता'' शब्द का इस्तेमाल किया गया है, जहां इसके लिए ''सहायता'' शब्द है। ''... तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिए एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था।'' आयत 14 में अनुवादित शब्द ''सहभागिता'' *sun* (के साथ) वाले उपसर्ग के साथ *koinonia* (''साझे का होना'') के क्रिया रूप के पहले आने वाले शब्द के मिश्रित शब्द, *sunkoinoneo* के एक रूप से अनुवाद किया गया है। अपने ऊपर पौलुस का आर्थिक बोझ उठाते हुए फिलिप्पियों की उस *के साथ* सहभागिता थी।

जब आप और मैं प्रभु के काम के लिए देते हैं, तो इससे हमें क्या मिलता है? पहली बात तो यह कि यह हमें प्रभु के काम में *सहभागिता* करने के योग्य बनाता है। हम जिस भी काम में सहायता देते हैं, उसमें *सहभागी बन जाते* हैं। उस भलाई की बातें सुनकर जो की जा रही हैं हमें पता चलता है कि उसके होने में हमारा योगदान, बल्कि महत्वपूर्ण योगदान है!

सहायता करने की सन्तुष्टि (4:15, 16, 18क)

इस आशीष के साथ बड़ी नज़दीकी से यह जानने की सन्तुष्टि जुड़ी है कि दूसरों की सहायता की गई है। फिलिप्पियों ने पौलुस के धन्यवाद की बात पढ़कर निश्चित रूप उस सन्तुष्टि का आनन्द लिया होगा।

पहले पाठ का अध्ययन करते हुए हमने देखा था कि फिलिप्पियों ने पौलुस की सहायता पहली बार नहीं की (देखें 1:5)। प्रेरित दस या इससे अधिक साल पहले की गई उनकी सहायता से अच्छी तरह परिचित था, जब उसने फिलिप्पी में कलीसिया स्थापित की थी:

> और हे फिलिप्पियो, तुम आप भी जानते हो कि सुसमाचार प्रचार के आरम्भ में जब मैंने मकिदुनिया से कूच किया जब तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने लेने-देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की। इसी प्रकार जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिए एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था (4:15, 16)।

आयत 15 का आरम्भ ''तुम आप भी जानते हो'' वाक्यांश से होता है। ''भी'' शब्द यह संकेत देता है कि पौलुस उनकी उदारता से परिचित था और उन्हें मालूम था कि उसे पता है। ''सुसमाचार प्रचार के आरम्भ'' वाक्यांश के सम्बन्ध में NASB में यह नोट है, ''[मूलतया] के आरम्भ।'' इसका अर्थ फिलिप्पियों के सम्बन्ध में सुसमाचार प्रचार का आरम्भ हो सकता है। NIV में ''सुसमाचार से तुम्हारी पहचान के आरम्भिक दिनों में'' है। परन्तु ये शब्द सम्भवतया पौलुस के काम के किसी नये पड़ाव के लिए हैं जो फिलिप्पी में *आरम्भ* हुआ था (प्रेरितों 16:9-12; देखें फिलिप्पियों 1:5)।

आयत 15 में पौलुस ने मकिदुनिया से विदा होने की बात की। फिलिप्पी मकिदुनिया में था (प्रेरितों 16:12), जो वर्तमान ग्रीस के उत्तर में है। उस इलाके से जाने के बाद प्रेरित वर्तमान

ग्रीस के दक्षिणी भाग अथोयात में गया। वहां उसने अथेने और कुरिन्थुस में प्रचार किया (प्रेरितों 17:15-18:11)। पौलुस ने फिलिप्पियों को बताया, ''जब मैं मकिदुनिया से विदा हुआ, तब तुम्हें छोड़ किसी मण्डली ने लेने-देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की।'' 2 कुरिन्थियों 11:8, 9 से हम निष्कर्ष निकालते हैं कि फिलिप्पी के मसीही लोगों ने पौलुस को सहायता तब भेजी जब वह कुरिन्थुस में था।

परन्तु कुरिन्थुस में सहायता पाने की बात 2 कुरिन्थियों 11:8, 9 में लिखते समय पौलुस ने बहुवचन ''कलीसिया*ओं*'' का इस्तेमाल किया। तो फिर फिलिप्पियों 4:15 में उसके कहने का क्या अर्थ था कि ''... *तुम्हें छोड़* किसी और मण्डली ने लेने-देने के विषय में मेरी सहायता नहीं की''? लेखकों ने ''लेने-देने'' शब्दों की विशेष व्याख्या करते हुए पौलुस के शब्दों को समझाने की कोशिश की है। कइयों का कहना है कि फिलिप्पियों ने पौलुस को आर्थिक सहायता ''दी'' और उससे पावती ''ली।'' इन व्याख्याओं को पढ़ते हुए मैंने विचार किया, ''पर क्या किसी *मण्डली* के सम्बन्ध में जिसने पौलुस को सहायता भेजी ये दोनों प्रबन्ध सही नहीं होंगे?'' ''लेने देने'' की आसान से आसान व्याख्या यह है कि फिलिप्पियों ने सहायता दी और पौलुस ने ली।

उलझाने वाली बात अभी भी रह जाती है कि ''तुम्हें छोड़।'' शायद पौलुस यह ज़ोर दे रहा था कि फिलिप्पी की कलीसिया ही एकमात्र मण्डली थी जो *निरन्तर* उसकी सहायता करती थी यानी उसके मिशनरी प्रयासों में उसकी *बराबर* सहयोगी।'' ''तुम्हें छोड़'' शब्दों का सही-सही महत्व जो भी हो, पौलुस फिलिप्पी के मसीही लोगों द्वारा की गई सेवा की *विलक्षणता* पर ज़ोर दे रहा था।

मकिदुनिया से जाने के बाद फिलिप्पियों की सहायता पर विचार करते हुए पौलुस को उस इलाके से निकलने से पहले उनके द्वारा आरम्भ की गई सहायता का स्मरण आया। फिलिप्पी से वह थिस्लुनीके को, बरास्ता इगनेशिया, रोमी राजमार्ग पर एक सौ या इससे अधिक मील गया था (प्रेरितों 16:39-17:1)। वहां उसने कुछ देर प्रचार किया और सिखाया, वहां रहते हुए वह अपना काम करने लगा था (देखें 1 थिस्सलुनीकियों 2:9; 2 थिस्सलुनीकियों 3:8) पर उसे फिलिप्पी से भी सहायता मिलती थी। पौलुस ने लिखा, ''जब मैं थिस्सलुनीके में था; तब भी तुम ने मेरी घटी पूरी करने के लिए एक बार क्या बरन दो बार कुछ भेजा था'' (फिलिप्पियों 4:16)।

जब हम इस पर विचार करते हैं तो पाते हैं कि यह अद्‌भुत था। फिलिप्पी की कलीसिया छोटी और विश्वास में नई थी। बाइबली और सांसारिक इतिहास के अनुसार, उस इलाके के लोग आर्थिक रूप में संघर्ष कर रहे थे (देखें 2 कुरिन्थियों 8:1-4)। थिस्सलुनीके एक बड़ा यानी उससे समृद्ध नगर था। तो भी फिलिप्पे के लोगों ने पौलुस को वहां सहायता भेजी थी।

मिशन कार्य करना आरम्भ करने के लिए किसी मण्डली के लिए कोई समय सीमा तय नहीं होती। कई बार सदस्य तर्क देते हैं, ''जैसे ही हम इस इलाके में मज़बूती से स्थापित हो जाएंगे, *जब* हम अन्य स्थानों में प्रभु के काम में सहायता के लिए धन भेजने लगेंगे।'' किसी मण्डली को लग सकता है, ''जैसे ही हमारे पास बिल्डिंग हो जाए'' या ''जैसे ही हम प्रचारक को वेतन देने के योग्य हो जाएं,'' या ''जैसे ही हम अपनी आवश्यकताओं को पूरा कर सकें''-*तब* हम अन्य स्थानों में खोए हुए हुओं पर ध्यान लगा पाएंगे।'' फिलिप्पी की कलीसिया ने इस प्रकार से तर्क नहीं दिया। छोटी हो या बड़ी, नई मण्डली ने जैसे भी वे कर पाए पौलुस की सहायता तुरन्त

आरम्भ कर दी और वह एक दशक तक सहायता करते रहे। *दूसरों* की आवश्यकताओं का ध्यान रखने जैसी बात से बढ़कर किसी मण्डली की मज़बूती का ''सार'' और कोई नहीं।

आयत 15 में ''तुम्हें छोड़'' शब्दों को एक बार फिर से देखते है। फिलिप्पियों ने अपने काम का आधार दूसरे को काम करने (या न करने) को नहीं बनाया। उन्हें पौलुस से प्रेम था और चाहे कोई करे या न, उन्होंने उसकी सहायता करने का निश्चय किया था।

इन भाइयों को यह पढ़कर बड़ी तसल्ली मिली होगी, ''मेरे पास सब कुछ है, बरन बहुतायत से भी है: जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं, उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूं'' (आयत 18क)। यूनानी शब्द के अनुवाद ''जो वस्तुएं तुम ने भेजी थीं'' का मूल अर्थ है ''तुम्हारी ओर से चीज़ें'' (जैसा कि NASB की कुछ मुद्राओं में है)। धन के अलावा उन्होंने कपड़े और अन्य सामान भी भेजा होगा। उन्होंने जो भी भेजा, पौलुस ने कहा कि ''मेरी आवश्यकता के लिए बल्कि उससे बढ़कर यह बहुत है। मैंने तो कुछ भविष्य की आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए भी रख लिया है।'' यह जानना कि आपने दूसरों की सहायता की है, देने की आशिषों में से एक है!

स्वर्ग में ''खाता'' बनाया गया (4:17, 18क)

कालान्तर में फिलिप्पियों के कामों की बात बताने के बाद पौलुस को लगा कि उसे फिर से इस पर ज़ोर देना चाहिए कि क्या वह अतिरिक्त दानों की ओर संकेत नहीं कर रहा था। ''यह नहीं कि मैं दान चाहता हूं परन्तु मैं ऐसा फल चाहता हूं, जो तुम्हारे लाभ के लिए बढ़ता जाए'' (आयत 17)। देने के मसीही उद्देश्य को यदि एक आयत संक्षिप्त करती है तो वह यही है। अपनी प्रेरणा दिए लेखकों के द्वारा परमेश्वर हर मसीह को देने की आज्ञा देता है (देखें 1 कुरिन्थियों 16:1, 2)। इसलिए नहीं कि उसे किसी चीज़ की आवश्यकता है (देखें प्रेरितों 17:25), बल्कि इसलिए कि *हम* देते हैं। वह हम से देने की इच्छा करता है क्योंकि इससे *हमें* कुछ मिलता है। LB में फिलिप्पियों 4:17: के शब्दों का इस्तेमाल इस प्रकार है: ''मैं आपके दानों का धन्यवाद तो करता हूं पर मेरी सबसे बड़ी खुशी तुम्हारी दयालुता के कारण मिलने वाला *तुम्हारा* प्रतिफल है।''

NASB में आयत 17 में यूनानी शब्द का अनुवाद ''लाभ'' ''फल'' के लिए इस्तेमाल होने वाला शब्द है। लेखाकार किसी खाते पर ब्याज की बात करने के लिए इसी शब्द का इस्तेमाल करते थे। और आयत 17 में इसका इस्तेमाल इसी अर्थ में हुआ है। REB में है, ''तुम्हारे खाते का ब्याज चढ़ता जा रहा है।'' मेरा एक स्थानीय बैंक में खाता है जिसकी ब्याज दर बहुत कम है। प्रतिदिन खाते का बकाया कुछ सैंट ही बढ़ता है। पौलुस की सहायता करके फिलिप्पी के लोग ''स्वर्ग के धन'' में जमा कर रहे थे (मत्ती 6:20; देखें 1 तीमुथियुस 6:17-19)। पौलुस ने उन्हें बताया कि उनके आत्मिक ''बैंक खाते'' से ''ब्याज'' मिल रहा है। यह संकेत देते हुए कि मेरे बैंक खाते में प्रतिदिन ब्याज मिलने की तरह स्वर्गीय ''खाते'' में भी लगातार ''ब्याज'' जुड़ता जा रहा है, उसने वर्तमान काल के रूप का इस्तेमाल किया।

अंग्रेजी अनुवाद में हर जगह यह स्पष्ट नहीं होता, पर पौलुस ने ''थैंक यू'' के नोट में व्यापारिक भाषा का इस्तेमाल किया:

- आयत 15 में उसने कहा, ''तुम्हें छोड़ और किसी मण्डली ने ... मेरी सहायता नहीं

की।'' यूनानी शब्द के अनुवाद ''सहायता की'' का अनुवाद ''के साथ साझेदान होना''[3] भी हो सकता है। फिलिप्पी लोग पौलुस के साथ आत्मिक ''साझेदार'' बन गए थे। एवोन मिलोन ने आयत 15 को इस प्रकार लिखा है: ''किसी और मण्डली ने मेरे साथ कारोबार नहीं किया। ...''[4]

- साझेदारी में स्पष्ट लेखा-जोखा होना आवश्यक है। इस कारण आयत 15 में पौलुस ने ''लेने-देने के मामले'' की बात की। जैक मुलर ने इसे यह ''कारोबारी शब्द है और आमदन और खर्च के हिसाब का संकेत देता है''[5] कहा। TEV में ''लाभ और हानियां'' है। अर्डट और गिंगरिक ने वित्तीय बही खाते की तरह ''डेबिट और क्रेडिट''[6] इस्तेमाल किया है।
- हम ने आयत 17 को देखा है जहां पौलुस ने ''लाभ जो तुम्हारे खाते में बढ़ता जाता है'' की लेखाकार की शब्दावली में बात की। CJB में है ''मैं देख रहा हूं कि तुम्हारे खाते का क्रेडिट बैलेंस कैसे बढ़ेगा।''

व्यापारिक भाषा का पौलुस का इस्तेमाल आयत 18 के पहले भाग में चरम पर पहुंच गया जब उसने कहा, ''मेरे पास सब-कुछ है वरन बहुतायत से भी है'' (4:18ख)। यूनानी शब्द (apecho panta) का अनुवाद ''मेरे पास सब-कुछ है'' ''पालकी बनाने में इस्तेमाल की जाने वाली तकनीकी अभिव्यक्ति'' था।[7] ''पहली सदी में यह संकेत देने के लिए कि बिल 'पूरा चुका दिया' है'' इस शब्द का इस्तेमाल होता था।[8] इस कारण NRSV में ''मुझे पूरा भुगतान मिल चुका है।'' जबकि TEV में तुम ने मुझे जो कुछ दिया है उन सब की पावती यह है।'' इसका अर्थ यह है कि ''तुम ने जो भी मेरा कर्ज़ा देना था वह चुका दिया गया है, और अब मुझे और भेजने की कोई आवश्यकता नहीं है।''

लेखाकार की शब्दावली का इस्तेमाल करते हुए पौलुस फिलिप्पियों के दान को वित्तीय सौदे में तबदील करने की कोशिश कर रहा था? नहीं, उसे अलंकार की भाषा का इस्तेमाल करना अच्छा लग रहा था, जैसे आज भी कुछ लोग करते हैं। प्रेरित की सजीव भाषा केवल फिलिप्पियों को आश्वस्त करने का ढंग था कि परमेश्वर ने उनके भले कार्यों को लिख लिया है और वह इसे भूलेगा नहीं (देखें इब्रानियों 6:10)। प्रभु उन्हें प्रतिफल देने में नाकाम नहीं होगा (1 कुरिन्थियों 3:8ख) और वह प्रतिफल उससे कहीं बढ़कर होगा, जो उन्होंने किया था!

हमें भी वही आवश्वासन मिल सकता है जब हम परमेश्वर के काम को आगे बढ़ाने के लिए देते हैं। देने की यह एक आशीष है!

प्रभु को ''बलिदान!'' (4:18ख)

पौलुस नहीं चाहता होगा कि किसी को यह लगे कि दान देने के विषय को बही-खाते से कम किया जा सकता है। वह बैंकिंग शब्दाडम्बर से याजकाई की शब्दावली में आ गया: ''जो वस्तुएं तुम ने इपफ्रुदीतुस के हाथ से भेजी थीं, उन्हें पाकर मैं तृप्त हो गया हूं, वह तो सुगन्ध और ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है'' (आयत 18ख)।

यहां लिया गया रूपक प्रभु को किए जाने वाले बलिदानों और भेंटों के सम्बन्ध में पुराने नियम का हवाला है। उदाहरण के लिए होमबलियों को सुखदायक सुगन्ध के रूप में परमेश्वर

को भाने वाली माना जाता था (उत्पत्ति 8:21; लैव्यव्यवस्था 1:9, 13, 17)। उन सुगन्धियों पर थोड़ी देर के लिए विचार करें जो आपको पसन्द हैं। आप पर फूल की सुगन्धि ... या आपकी पत्नी द्वारा इस्तेमाल किए जाने वाले पर्फ्यूम ... या नहाने के बाद बच्चे की मीठी महक पर विचार कर सकते हैं। अब इस पर विचार करें कि परमेश्वर के लिए आपके उसके काम में सहायता देने से बढ़कर कोई ''सुगन्ध'' या आनन्द देने वाली बात है ही नहीं।

पौलुस ने ''ग्रहण करने के योग्य बलिदान'' वाक्यांश का इस्तेमाल किया। सब मसीही लोग याजक हैं और उन्हें प्रभु के सामने बलिदान चढ़ाने आवश्यक हैं (1 पतरस 2:5, 9)। पुराने नियम में लोग पाप के लिए बलियां (देखें लैव्यव्यवस्था 4:2, 3) और धन्यवाद और महिमा को दिखाने के लिए बलियां देते थे (देखें लैव्यव्यवस्था 7:11, 12)। हम पाप के लिए बलिदान नहीं दे सकते क्योंकि यीशु ने क्रूस पर दे दिया है (इब्रानियों 9:26; देखें इफिसियों 5:2)। परन्तु हम अपने आपको, यानी जो कुछ हम हैं और जो करते हैं, धन्यवाद और महिमा के बलिदानों के रूप में दे सकते हैं (रोमियों 12:1; इब्रानियों 13:15, 16; देखें फिलिप्पियों 2:17)। ऐसा करने का एक ढंग मसीह के कार्य के लिए उदारता से देना है (फिलिप्पियों 4:18)।

आयत 18 में पौलुस फिलिप्पियों की बड़ी तारीफ़ कर रहा था। लोगों के पास देने के लिए सबसे *अच्छी* चीज़ बलिदान ही थे। केवल तभी वे स्वीकार्य होते थे यानी वे केवल तभी परमेश्वर को पसन्द आते थे (देखें मलाकी 1:6-8)। इस कारण जब प्रेरित ने फिलिप्पियों को बताया कि उनका दान ''ग्रहण करने के योग्य बलिदान है, जो परमेश्वर को भाता है,'' तो एक अर्थ में वह कह रहा था, ''मैं जानता हूं कि तुम ने बढ़िया से बढ़िया चीज़ें भेजी हैं!'' हमें भी अपने प्रभु के लिए अच्छी से अच्छी चीज़ें देनी चाहिए।

पौलुस दान देने को इसके उच्चतम स्तर तक उठा रहा था। वह फिलिप्पियों को यह समझाना चाहता था कि अन्त में उनका दान उसे नहीं बल्कि प्रभु को था (देखें मत्ती 10:40-42; 25:31-40; प्रेरितों 9:3-5)। चाहे मिला तो उसे था पर इसका वास्तविक प्राप्तकर्त्ता पिता ही था। यह जानते हुए कि प्रभु को किए गए हमारे दान देने की एक आशीष है।

हर ज़रूरत पूरी हुई (4:19)

फिलिप्पी के लोगों ने पौलुस की आवश्यकताओं को पूरा किया था। अब प्रेरित ने उनको बताना चाहा कि परमेश्वर उनकी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। आयत 19 बाइबल की बड़ी प्रतिज्ञाओं में से एक है: ''और मेरा परमेश्वर भी अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित मसीह यीशु में है, तुम्हारी एक घटी को पूरी करेगा।'' ड्वाइट पैंटिकॉस्ट ने इस आयत को ''युगों से परमेश्वर की संतान के कदमों के नीचे की चट्टान'' नाम दिया।[9] इस पर कुछ संदेह है कि पौलुस यहां तथ्य बता रहा था या इच्छा। हस्तलिपि प्रमाण तो तथ्य के पक्ष में ही है।[10] ''परमेश्वर भेजेगा''-और NASB में इसका यही अनुवाद है।

वहां इस आयत का आरम्भ ''और'' के साथ होता है। यह इस आयत को पिछली आयत के साथ जोड़ देता है। क्योंकि फिलिप्पी के लोग पौलुस के लिए दान देने में बड़े उदार थे, इस कारण परमेश्वर उन्हें उदारता से सम्भालेगा। हमारे लिए सबक यह है कि यदि हम में फिलिप्पी के लोगों वाली देने की निस्वार्थ आदतें हों तो परमेश्वर हमारी ज़रूरतों को पूरा करेगा। ''देने के

लिए बंद मुट्ठी पाने के लिए भी बंद रही है, जबकि देने के लिए खुला हाथ पाने के लिए भी खुला ही रहता है।''[11]

फिर ''मेरा परमेश्वर'' शब्द आते हैं। पौलुस ने इस वाक्यांश का इस्तेमाल कभी नहीं किया। यह निजी भरोसे का निजी स्पर्श और अभिव्यक्ति है। एक अर्थ में पौलुस ने कहा, ''मेरा परमेश्वर तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।''

परमेश्वर क्या करेगा? ''परमेश्वर तुम्हारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा।'' क्या इसका अर्थ यह है कि परमेश्वर हमारी हर मांग के अनुसार हमें देता है? नहीं। किसी ने कहा है कि वह हमारी ''आवश्यकताएं'' पूरी करता है, न कि हमारे ''लोगों'' को। प्रभु वही देता है जिसकी हमें सचमुच में आवश्यकता है, यानी जो हमारी भलाई के लिए है। अरल पामर ने लिखा है, ''हमारी आवश्यकताएं इससे परिभाषित होती हैं कि परमेश्वर हमसे क्या बनने की अपेक्षा करता है, न कि इससे हम क्या बना या करना चाहते हैं।''[12]

हमारी इच्छाएं तो बहुत होती हैं पर उसकी तुलना में आवश्यकताएं बहुत ही कम। मनोवैज्ञानिक और परामर्शदाता मनुष्य की मूल आवश्यकताओं को विभिन्न प्रकार से दिखाते हैं, परन्तु नीचे दी गई सूची हमारे उद्देश्य को पूरा कर देती है:[13]

- शारीरिक आवश्यकताएं–भोजन, कपड़े, मकान और जीवन की अन्य अनिवार्यताओं की आवश्यकता।
- शारीरिक सुरक्षा–यह आश्वासन कि भविष्य में शारीरिक आवश्यकताएं पूरी की जाएंगी।
- भावनात्मक सुरक्षा–स्वीकार किए जाने की भावना की आवश्यकता।
- जीवन में लक्ष्य–ज़रूरत महसूस होने की आवश्यकता।
- अपनी क्षमा को बढ़ाने का अवसर–बढ़ने की आवश्यकता।

यह समझना कितना अद्‌भुत है कि परमेश्वर इन सभी आवश्यकताओं की पूर्ति करता है:

- शारीरिक आवश्यकताएं–परमेश्वर ने हमसे वादा किया है कि यदि हम उसकी इच्छा को पूरी करें तो वह हमारी आवश्यकताओं को पूरा करेगा (मत्ती 6:33)।
- शारीरिक सुरक्षा–परमेश्वर ने भविष्य में हमें सम्भालने की प्रतिज्ञा का वादा किया है (मत्ती 6:34; देखें फिलिप्पियों 4:6)
- भावनात्मक सुरक्षा–परमेश्वर ने हमसे शर्त रहित प्रेम किया है (देखें रोमियों 5:8; 8:35, 39)।
- जीवन का उद्देश्य–मसीही होना हमें जीने का कारण देता है (देखें फिलिप्पियों 1:21; इफिसियों 2:10)।
- अपनी क्षमता बढ़ाने का अवसर–हम मसीह में परिपक्व हो सकते हैं (देखें इफिसियों 4:15; कुलुस्सियों 1:28)।

बेशक, हमारे लिए परमेश्वर के उपाय का सार उसके पुत्र का दान और उद्धार की प्रतिज्ञा है। मेलोन ने ''बड़े हृदय की भूख–क्षमा, शान्ति और आत्मिक सामर्थ की आवश्यकता'' की बात

की है।[14] परमेश्वर यह सब चीज़ें देता है। इसके अलावा उसका आत्मिक उपाय अन्य हर क्षेत्र में उसके उपाय की गारंटी है: ''जिस ने अपने निज पुत्र को भी न रख छोड़ा, परन्तु उसे हम सब के लिए दे दिया: वह उसके साथ हमें और सब कुछ क्योंकर न देगा?'' (रोमियों 8:32)। पैंटीकॉस्ट ने इस पर टिप्पणी की है:

> यदि मुझे आभूषणों की अच्छी दुकान पर जाना हो और उनकी दुकान से बढ़िया हीरे खरीदनें हो तो मुझे यकीन है कि उसे लपेटने के लिए कागज़ मांगने पर वे बुरा नहीं मानेंगे। परमेश्वर, जिसने हमारी आत्मिक आवश्यकताओं को पूरा करने के लिए स्वर्ग की सबसे बड़ी सम्पत्ति दे दी है, हमारी भौतिक आवश्यकताओं को पूरा करने को बड़ी बात नहीं मानता।[15]

परमेश्वर हमारी अस्थाई और आत्मिक दोनों आवश्यकताओं को पूरा करता है, तो क्या हमें अपने काम छोड़ देने चाहिए, अपना सब-कुछ लुटाकर केवल ''उसी पर निर्भर'' हो जाना चाहिए? नहीं, हमारे काम और सम्पत्ति हमारे लिए प्रभु के उपाय का एक भाग हैं (देखें याकूब 1:17)। ''यह सोचना मूर्खता होगी कि जो कुछ परमेश्वर ने हमें दिया है, हम उसे उड़ा दें ... और फिर उससे दखल देकर हमारी आवश्यकताओं को पूरी करने की उम्मीद रखें।''[16] प्रभु हमसे काम करने की उम्मीद रखता है (2 थिस्सलुनीकियों 3:10) और जो कुछ भी हम अपने और दूसरों के लिए उपाय करने के लिए कर सकते हैं, वह करता है (इफिसियों 4:28; 1 तीमुथियुस 5:8)। साथ ही क्या यह अहसास करना अद्‌भुत नहीं है कि परमेश्वर हम पर नज़र रख रहा है? वह यह सुनिश्चित करेगा कि हमारी जरूरत पूरी हो गई है!

इससे हमारे सामने एक सवाल आता है कि परमेश्वर हमारी आवश्यकताओं को पूरा *कैसे* करता है? जैसा कि संकेत दिया गया है, वह हमें काम करने की योग्यता और अवसर देता है। और ढंगों की बात की जा सकती है, जैसे उसने अन्य लोगों के द्वारा पौलुस की आवश्यकताओं को पूरा किया (फिलिप्पियों 4:18), और वैसे ही वह हमारे लिए भी कर सकता है। फिर उसने हमसे प्रतिज्ञा की है कि वह हमारे लिए उपाय करता रहेगा (रोमियों 8:28)। फिर, हमेशा, हमेशा वह अपने निजी प्रेम और लगाव से हमारी आत्मिक आवश्यकताओं की पूर्ति करता है (रोमियों 8:39)। बड़ी बात यह समझना नहीं है कि परमेश्वर हमारी देखभाल कैसे करता है, बल्कि यह विश्वास करना है कि वह करेगा और उसमें भरोसा रखना सीखना है।

क्या परमेश्वर सचमुच में हमारी सब आवश्यकताओं की पूर्ति करने में सक्षम है। आयत 19 ''अपने उस धन के अनुसार जो महिमा सहित'' है, वाक्यांश के साथ आगे बढ़ती है। टीकाओं में इस पर बहस होती है कि ''महिमा सहित'' क्रिया शब्द ''पूरी करेगा'' (''महिमा सहित'') या संज्ञा ''धन'' (''महिमा सहित धन'') या इसका इस्तेमाल स्वर्ग के लिए किया गया है (''महिमा'' का देश) पर सभी इस बात से सहमत हैं कि यह वचन इस बात का संकेत देता है कि परमेश्वर के संसाधन महिमा युक्त हैं, क्योंकि वे *कभी न खत्म होने वाले* हैं।

> परमेश्वर अपनी अनगिनत संतान की असंख्य आवश्यकताओं को पूरा कर सकता है क्योंकि वह अपनी महिमा के धन में असीम है। सीमित धन वाले व्यक्ति को अलग अलग कार्यों के लिए देने पर अपना धन लगेगा: परन्तु यदि मनुष्य के पास असीमित धन वाले

> व्यक्ति को विभिन्न कार्यों के लिए देने के लिए अपना धन कम लगेगा। परन्तु किसी के पास [असीमित] धन हो तो वह किसी को [बिना सीमा के] दे सकता है तो उसकी आपूर्ति में कोई कमी नहीं होगी। परमेश्वर महिमा में असीम है इस कारण वह असीमित आवश्यकताओं के लिए दे सकता है और फिर भी उसके पास असीमित सामग्री रहेगी।[17]

इसलिए परमेश्वर ''हमारी विनती और समझ से कहीं अधिक काम कर सकता है, उस सामर्थ के अनुसार जो हम में कार्य करता है'' (इफिसियों 3:20)! वारेन वियर्सबे ने लिखा है:

> फिलिप्पियों 4:18-19 में एक दिलचस्प अन्तर है। हम इसे इस तरह कह सकते हैं कि यदि हमें पौलुस की बात अपने शब्दों में कहनी हो: तो तुम ने *मेरी* आवश्यकता को पूरा किया और अब परमेश्वर *तुम्हारी* आवश्यकता को पूरा करेगा। तुम ने मेरी *एक* आवश्यकता को पूरा किया था, पर मेरा परमेश्वर तुम्हारी *सभी* आवश्यकताओं को पूरा करेगा। तुम ने अपनी *निर्धनता* में से दिया था, परन्तु परमेश्वर अपनी महिमा के *धन* में से तुम्हारी आवश्यकताओं की पूर्ति करेगा![18]

हमें इस वचन की पूरी समझ नहीं है। हमें आयत के अन्त में ''मसीह यीशु में'' मुख्य शब्दों को भूलना नहीं चाहिए। 4:19 की शानदार प्रतिज्ञा ''मसीह यीशु में'' ही पूरी होती है और केवल उन्हीं के लिए है, जो ''मसीह यीशु में'' हैं यानी जिन्होंने उसमें बपतिस्मा ले लिया है और जो उस में जीवन बिता रहे हैं (रोमियों 6:3, 4; गलातियों 3:26, 27; कुलुस्सियों 2:6)। पैंटिकॉस्ट ने इस पर बिल्कुल सही टिप्पणी की है:

> यह प्रतिज्ञा ... पहले से आज्ञापालन को मान लेती है। आज्ञापालन दिए बिना प्रतिज्ञा का पालन करना परमेश्वर के लिए अनुमान है। यह विश्वास की कमी को दिखाता है। ...
>
> ... हमारे प्रभु ने लोगों की भीड़ से कहा था, ''मेरा पिता पक्षियों और घास को सम्भालता है, पर *पहले* तुम परमेश्वर के राज्य की खोज करो तो ये सब वस्तुएं भी मिल जाएंगी।''
>
> यदि यीशु मसीह हमारे जीवनों में सही स्थान में नहीं है, और यदि हम परमेश्वर की इच्छा से सही ढंग से जुड़े हुए नहीं हैं, तो यह कहना अनुमान ही होगा कि ''[हमारा] परमेश्वर [हमारी] सभी आवश्यकताओं को पूरा करेगा। ...''[19]

परन्तु यदि हम जैसा हमें देना चाहिए वैसे देते हुए, उसकी इच्छा पूरी करने को समर्पित हैं तो उसने हमारी हर आवश्यकता की पूर्ति करने का वायदा किया था। यह देने की सबसे बड़ी आशिषों में से एक है।

परमेश्वर की महिमा हुई (4:20)

4:19 के चर्म वाले विचार पर पहुंचने पर पौलुस उसकी महिमा को रोक नहीं पाया: ''हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे'' (4:20क)। पौलुस ने ''*मेरा* परमेश्वर'' कहा था! अब उसने अपने पाठकों से ''*हमारे* परमेश्वर'' का परिचय करवाया। *उनके* परमेश्वर ने उन्हें ''महिमा सहित धन'' दिया था (आयत 19); सो बदले में उसे महिमा मिलनी चाहिए थी।

मूल भाषा में अनुवादित वाक्यांश ''युगानुयुग'' का मूल अर्थ ''युगों-युगों तक'' है। उस समय के लोगों के लिए अनन्तकाल को समझने का एकमात्र ढंग एक युग के बाद दूसरा युग, और मानवीय समझ से बाहर अन्त तक जाना था। परमेश्वर की महिमा *सदा के लिए* होनी है। महिमा करने का हमारा एक ढंग वैसे देना है जैसे हमें देना चाहिए। यह जानना कि हम परमेश्वर की महिमा कर रहे हैं देने की आशिषों में से एक है।

आयत 20 का समापन ''आमीन'' शब्द के साथ होता है। ''ऐसा ही हो'' या ''सत्य है।'' बेशक, जो पौलुस ने लिखा था वह पक्का था और उस पर संदेह नहीं किया जा सकता था! ''हमारे परमेश्वर और पिता की महिमा युगानुयुग होती रहे। *आमीन।*''

सारांश

हमने उन कई आशिषों की बात की है, जो हमें मिलती हैं जब हम वैसे देते हैं, जैसे प्रभु ने हमें आज्ञा दी है। क्या फिलिप्पियों ने इन आशिषों को पाने के लिए दिया था? सम्भवतया नहीं, वे तो पौलुस से प्रेम करते थे। जब उन्हें पता चला कि वह कहां है और उसे क्या-क्या चाहिए, तो उन्होंने उसके लिए सहायता भेजी। उन्हें यह जानकर आश्चर्य हुआ होगा कि उनकी उदारता के कारण उन्हें कितने लाभ मिल गए हैं:

- उन्हें वह आशीष मिली थी, जो सहभागिता करने से मिलती है।
- उन्हें एक-दूसरे की सहायता करने की संतुष्टि मिली।
- वे अपने स्वर्गीय खाते में जमा कर रहे थे!
- उनका दान प्रभु को भाने वाला ''बलिदान'' था।
- उन्हें यह प्रतिज्ञा मिली थी कि परमेश्वर उनकी हर आवश्यकता को पूरा करेगा।
- परिणाम यह हुआ कि इससे परमेश्वर की महिमा हुई।

इस पर कभी संदेह न करें: जो कुछ उदारता से देने के लिए फिलिप्पियों के लिए किया, वही यह आपके लिए भी करेगा! ''दिया करो, तो तुम्हें भी दिया जाएगा: लोग पूरा नाप दबा-दबाकर और हिला-हिलाकर और उभरता हुआ तुम्हारी गोद में डालेंगे, क्योंकि जिस नाप से तुम नापते हो, उसी से तुम्हारे लिए भी नापा जाएगा'' (लूका 6:38)।

परन्तु पहले आपको अपने आपको प्रभु को देना होगा (देखें 2 कुरिन्थियों 8:5ख)। याद रखें कि ये आशिषें उन्हीं के लिए हैं जो ''मसीह में'' हैं। यदि आपने पश्चात्तापी विश्वासी के रूप में यीशु में बपतिस्मा नहीं लिया है (मरकुस 16:16; प्रेरितों 2:38; गलातियों 3:26, 27) तो आज ही ले लें।

टिप्पणियां

[1]डब्ल्यू. ई. वाइन, *दि एक्सपेंडेड वाइन'स एक्सपोज़िटरी डिक्शनरी ऑफ़ न्यू टैस्टामेंट वर्ड्स,* संपा. जॉन आर. कोहलेन्बर्गर III (मिनियापोलिस: बैथनी हाउस पब्लिशर्स, 1984), 30-31. [2]वही, 494. [3]अलफ्रेड मार्शल, *दि इंटरलीनियर ग्रीक-इंग्लिश न्यू टैस्टामेंट* (लंदन: सेमुएल बैगस्टर एंड सन्स लिमिटेड, 1958), 788. [4]एवन मेलोन, *प्रैस द टू प्राइज* (नैशविल्ले: टवंट्यिथ सेंचुरी क्रिश्चियन, 1991), 121. [5]जैक जे. मुल्लर, *दि एपिस्टल*

ऑफ़ पॉल टू दि फिलिपियंस एंड टू फिलेमोन, दि न्यू इंटरनैशनल कमैंट्री ऑन न्यू टैस्टामेंट, संपा. एफ. एफ. ब्रूस (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: विलियम बी. ईर्डमैंस पब्लिशिंग कं., 1955), 149. [6]वाल्टर बाउर, *ए ग्रीक-इंग्लिश लैक्सिकन ऑफ दि न्यू टैस्टामेंट एंड अदर अर्ली क्रिश्चियन लिटरेचर,* द्वितीय संस्क., संशो. विलियम एफ़. अर्ंट एंड एफ़. विल्बर गिंगरिच (शिकागो: यूनिवर्सिटी ऑफ शिकागो प्रैस, 1957), 204. [7]जॉन ए. नाइट, *बीकन बाइबल एक्सपोज़िशंन,* अंक 9, *फिलिपियंस, क़लोशियंस, फिलेमोन* (कैन्सास सिटी, मिज़ोरी बीकन हिल प्रैस, 1985), 122. [8]पैट एडविन हेरल्ल, *दि लैटर ऑफ पॉल टू दि फिलिपियंस,* दि लिविंग वर्ड कमैंट्री सीरीज़, संपा.एवरेट फर्ग्यूसन (ऑस्टिन: आर.बी. स्वीट कं., 1969), 147–48. [9]जे. डव्हाइट पैंटीकॉस्ट, *दि लॉय ऑफ़ लिविंग: ए स्टडी ऑफ़ फिलिपियंस* (ग्रैंड रैपिड्स, मिशिगन: जौंडरवन पब्लिशिंग हाउस, 1973), 239. [10]गेरल्र्ड एफ. हाथॉर्न, *वर्ड बिब्लिकल कमैंट्री,* अंक 43, *फिलिप्पियंस,* संपा. डेविड ए. हब्बर्ड एंड ग्लेन डब्ल्यू. बार्कर (वाको, टैक्सस: वर्ड बुक्स, 1983), 208. हाथॉर्न के टीका में एक इच्छा के विचार का समर्थन किया गया है, परन्तु लिखा है, ''यदि कोई उत्तर के लिए केवल हस्तलिपि के प्रमाण पर निर्भर हो, तो वह अधिक सम्भावना यही है कि ... 'वह भर देगा' का विकल्प ही लेगा।''

[11]वेंडल विंक्लर, ''क्रिश्चियन फैलोशिप; गॉड विल प्रोवाइड; सेंट्'स इन सीज़र'स हाउस होल्ड; सल्यूटेशन एंड द बेनेडिक्शन,'' *ए होमिलेटिक कमैंट्री ऑन द बुक ऑफ़ फिलिपियंस,* संपा. गारलैंड एल्किन्स एंड थॉमस बी. वारेन (मेर्मफिशप: गेटवेल चर्च ऑफ़ क्राइस्ट, 1987), 285. [12]अर्ल एफ. पामर, *इंटेग्रिटी इन ए वर्ल्ड ऑफ़ प्रिटेंस: इनसाइट्स फ्रॉम द बुक ऑफ फिलिपियंस* (डाउनर्स ग्रोव, इनिलोइस: इंटरवर्सिटी प्रैस, 1992), 176. [13]डेविड एल. रोपर: ''विक्टर ओवर दि चैलेंज ऑफ़ लाइफ,'' के अप्रकाशित क्लास नोट्स से लिया गया। यह सूची कई परामर्श देने वाली पुस्तकों पर आधारित है। [14]मेलोन 122. [15]पैंटिकॉस्ट, 245. [16]वही, 244. [17]वही। [18] वारेन डब्ल्यू. वियर्सबे, *दि बाइबल एक्सपोज़िशन कमैंट्री,* अंक 2 (व्हीटन, इलिनोइस: विक्टर बुक्स, 1989), 99. [19]पैंटिकॉस्ट, 243–44.